# लोक शिक्षण संचालनालय, मध्यप्रदेश, भोपाल

# नेशनल एचीवमेंट सर्वे (NAS)2021 की तैयारी हेतु

# टीचर्स हैण्डबुक

## कक्षा – दसवीं

# विषय – हिन्दी

# NAS परिचय

NAS विद्यालयों में सीखने के आंकलन के लिए राष्ट्र स्तर पर विकसित एक राष्ट्र व्यापी सर्वेक्षण कार्यक्रम है। इसके तहत कक्षा 3, 5, 8 व 10 के विद्यार्थियों के सीखने के स्तर एवं शैक्षणिक उपलब्धि का मूल्यांकन करने हेतु प्रत्येक 03 वर्ष के अंतराल पर सर्वे आयोजित किया जाता है।

पूर्व में यह सर्वे 2017 में आयोजित किया गया था । इस वर्ष NAS सर्वे **12 नवम्बर 2021** को आयोजित होना है। यह सर्वे **हिन्दी, अंग्रेजी,गणित, विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान विषयों में किया जाएगा।** NCERT द्वारा सभी विषयों के लर्निंग आउटकम्स जारी किए गए हैं। इन्हीं लर्निंग आउटकम्स पर यह टेस्ट आधारित होगा।

# NAS के उद्देश्य :

NAS के अंतर्गत देश/प्रदेशों के शासकीय और शासकीय सहायता प्राप्त अशासकीय विद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थियों के सीखने की उपलब्धियों का आंकलन किया जाता है। इसके आधार पर भविष्य में विद्यालयों और शिक्षकों की शैक्षणिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शैक्षणिक नीतियां और कार्यक्रम तैयार करते हुए विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में सुधार लाने हेतु निम्नानुसार प्रयास किये जा सकेंगे–

1. विद्यार्थियों के सीखने के अधिगमों की प्राप्ति हेतु
2. विद्यार्थियों के लर्निंग गैप की पहचान करने हेतु
3. शिक्षकों के प्रोफेशनल डेवेलपमेंट हेतु
4. गुणवत्ता शिक्षा के लिए कार्यक्रम तैयार करने हेतु
5. कक्षा शिक्षण में सहायता करने हेतु

To provide structured feedback on student learning levels at District, State, and national levels. These inputs are used for policy planning and designing pedagogical interventions to improve quality and ensure equity in learning.

# विगत सर्वे में प्रदेश की स्थिति :

पिछले सर्वे में मध्यप्रदेश की स्थिति आशा अनुरुप नहीं रही । केवल हिन्दी विषय में ही प्रदेश का प्रदर्शन संतोषजनक था । अन्य विषयों में प्रदेश के विद्यार्थियों का औसत राष्ट्रीय औसत से कम था इससे पता चलता है कि प्रदेश के विद्यार्थियों में विषयवार अवधारणाओं की समझ विकसित नहीं हो पायी है। इससे यह भी पता चलता

है कि विद्यार्थी सीखी हुई अवधारणाओं का उपयोग अपने दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने में नहीं कर पा रहे हैं।

हिन्दी में विद्यार्थियों के स्कोर का प्रदेश का औसत 49.9 था जबकि राष्ट्रीय औसत 46.1 था, जो निम्नानुसार है।

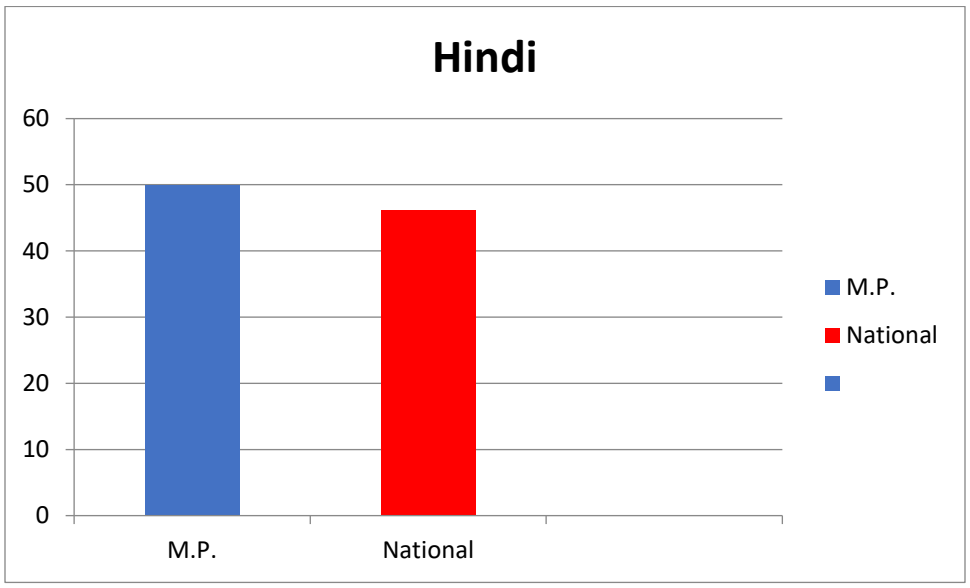


**अतः यह जरूरी है कि विद्यार्थियों में निर्धारित लर्निंग कॉम्पेटेन्सी (दक्षताओं) के अनुसार विषयवार अवधाराणाओं की सही समझ विकसित की जाए।**

**इसके लिए जरूरी है कि विद्यार्थियों को इस वर्ष के सर्वे के लिए बेहतर तरीके से तैयार किया जाए।**

## NAS परीक्षा 2021 की तैयारी हेतु प्रैक्टिस टेस्ट की रूपरेखा :

NAS परीक्षा के आयोजन के पूर्व विद्यार्थियों को NAS परीक्षा के पैटर्न से अवगत कराने हेतु तीन प्रैक्टिस टेस्ट आयोजित कराए जाने के निर्देश दिए गए थे। अभी तक एक प्रेक्टिस टेस्ट दिनांक 11 से 16 सितंबर के मध्य आपके द्वारा करवाया गया होगा। प्रथम टेस्ट में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। आशा है आपके द्वारा संचालनालय के पत्र दिनांक 7.9.2021 अनुसार कार्यवाही की गई होगी। आगामी कार्यक्रम निम्नानुसार है :

# आगामी प्रैक्टिस टेस्ट का विवरण :

| प्रैक्टिस टेस्ट | टेस्ट की तिथि | प्रत्येक विषय के प्रैक्टिस टेस्ट पेपर में प्रश्नों की संख्या |
|---|---|---|
| प्रैक्टिस टेस्ट द्वितीय | 07.10.2021 से 12.10.2021 | 70 |
| प्रैक्टिस टेस्ट तृतीय | 28.10.2021 से 30.10.2021 एवं 8 एवं 9 नवंबर | 70 |

# प्रैक्टिस टेस्ट की समय–सारणी :

| द्वितीय प्रैक्टिस टेस्ट दिनांक | तृतीय प्रैक्टिस टेस्ट दिनांक | विषय |
|---|---|---|
| 07-10-2021 | 28-10-2021 | अंग्रेजी |
| 08-10-2021 | 29-10-2021 | गणित |
| 09-10-2021 | 30-10-2021 | विज्ञान |
| 11-10-2021 | 8-11-2021 | हिन्दी |
| 12-10-2021 | 9-11-2021 | सामाजिक विज्ञान |

# दूसरा प्रैक्टिस टेस्ट और तीसरा प्रैक्टिस टेस्ट पेपर विवरण :

1. NAS हेतु दूसरा और तीसरा प्रैक्टिस टेस्ट पेपर विद्यार्थियों से हल कराया जाएगा ।
2. दोनों प्रैक्टिस टेस्ट के मुद्रित टेस्ट पेपर विद्यालयों को जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रदाय कराए जाएंगे।
3. विद्यार्थियों के दूसरे और तीसरे प्रैक्टिस टेस्ट पेपर का समय प्रातः 10:30 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक उपरोक्त निर्धारित दिनांकों को समय सारणी अनुसार आयोजित किए जाएंगे।
4. दूसरे और तीसरे प्रैक्टिस टेस्ट पेपर के निर्धारित दिनांकों में कराने के पश्चात दोपहर 1:00 बजे से 4:00 बजे तक संबंधित विषय शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को सही उत्तर बताते हुए उत्तरों की जाँच कराई जाएगी और सही हल करने की विधि समझाई जाऐगी।
5. सभी विषयों के प्रैक्टिस टेस्ट पेपर में सभी विद्यार्थी सम्मिलित होंगे।
6. शिक्षक और प्राचार्य सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी प्रैक्टिस टेस्ट में उपस्थित रहें।
7. प्रैक्टिस टेस्ट पेपर में सभी प्रश्न वस्तुनिष्ठ (बहुविकल्पीय) होंगे।
8. प्रश्न पत्र में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्रश्न पत्र में ही सही विकल्प पर √ (सही) चिन्ह लगाकर दिये जाएंगे।

# नेशनल अचीवमेंट सर्वे –2021 का स्वरूप

- NAS के प्रत्येक विषय के प्रश्न पत्र में 35 प्रश्न पूछे जाएंगे। जो विगत 2017 के टेस्ट पेपर से लिए जाएंगे।
- पूर्व में प्रेषित प्रथम प्रैक्टिस टेस्ट पेपर और उसके उत्तर (आन्सर की) दिये गये हैं जो NAS 2017 के प्रश्नपत्रों पर आधारित था।
- ऐसी संभावना है कि NAS 2017 के प्रश्न पत्र से NAS 2021 के टेस्ट पेपर्स में प्रति विषय 07 प्रश्न दिए जा सकते हैं।
- प्रैक्टिस टेस्ट में से प्रति विषय 02 प्रश्न डिजीलेप के माध्यम से भी प्रति दिवस विद्यार्थियों को अभ्यास हेतु अलग से उपलब्ध कराए जाएंगे।
- लर्निंग आउटकम्स पर विद्यार्थियों का असेसमेंट किया जाएगा।

| विषय /क्षेत्र | कक्षा 10 के लर्निंग आउटकम्स |
|---|---|
| हिन्दी | 1 |
| गणित | 12 |
| विज्ञान | 10 |
| समाजिक विज्ञान | 12 |
| अंग्रेजी | 1 |
| कुल | 36 |

# सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)

LI1011 -पाठ्यवस्तु में शामिल रचनाओं के अतिरिक्त अन्य कविता कहानी एकांकी को पढते लिखते और मंचन करते है।

# NAS हिन्दी के विषय क्षेत्र (डोमेन)

- कथा,प्रदर्शनी, तर्क, सूचियां, प्रपत्र, रेखांकन, टाइमटेबल और आरेख
- स्ट्रैंड (संज्ञानात्मक जटिलता)
- जानकारी प्राप्त करना (पता लगाना)
- दुनिया के, संबंध में अपने ज्ञान की व्याख्या और विश्लेषण करना
- मूल्यांकन और उनके दृष्टिकोण बहस
- विभिन्न विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर चर्चा
- पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते है।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ
- विविध कलाओं की समझ

## प्रश्नपत्र का स्वरूप

सर्वे के प्रश्नपत्र 5 सेट में होंगें प्रत्येक सेट में 2 विषय होंगें। किसी भी विद्यार्थी को कोई भी सेट मिल सकता है। सेट किस तरह के होंगें यह नीचे दिया गया है। प्रत्येक सेट में प्रत्येक विषय में 7 एंकर प्रश्न होंगें। एंकर प्रश्न का तात्पर्य यह है कि विगत नेशनल अचीवमेंट सर्वे में जो टेस्ट पेपर दिया गया था उस टेस्ट पेपर में से **प्रत्येक विषय में 7 प्रश्न रिपीट** होंगें। प्रथम टेस्ट पेपेर आप सभी विद्यार्थियों को समझाया था। उसी प्रश्न पत्र में से प्रत्येक विषय में 7 प्रश्न आएंगें। अतः यह आवश्यक है कि पूर्व प्रश्नपत्र को विद्यार्थियों को ध्यान से समझाकर हल करवाया जाए। **एक सेट में दिए गए 70 प्रश्नों के उत्तर 120 मिनट यानी 2 घंटे में हल करना होगा ।**

**दिनांक – 12 नवंबर 21**

**समय – 10.30 से 12.30**

| Class 10 | Set 1 | | | Set 2 | | | Set 3 | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | Area | New | Anchor | Area | New | Anchor | Area | New | Anchor |
| Sub 1 | Lang- A -Hindi | 28 | 7 | Mat- B | 28 | 7 | Sci-A | 28 | 7 |
| Sub 2 | Mat-A | 28 | 7 | Social-A | 28 | 7 | Eng-A | 28 | 7 |
| | Total | 56 | 14 | Total | 56 | 14 | Total | 56 | 14 |
| | | 70 | | | 70 | | | 70 | |

| Class 10 | Set 4 | | | Set 5 | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | Area | New | Anchor | Area | New | Anchor |
| Sub 1 | Social- B | 28 | 7 | Lang- B Hindi | 28 | 7 |
| Sub2 | Eng-B | 28 | 7 | Sci-B | 28 | 7 |
| | Total | 56 | 14 | | 56 | 14 |
| | | 70 | | | 70 | |

## महत्वपूर्ण बिन्दु :

1. शिक्षक इस हैण्डबुक में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए अभ्यास टेस्ट कराएंगे। सभी प्रैक्टिस टेस्ट पेपर में वस्तुनिष्ठ प्रकार के ही प्रश्न होंगे ।
2. सभी प्रैक्टिस टेस्ट पेपर के प्रश्न में 04 विकल्प होंगे इनमें से सही उत्तर पर विद्यार्थी सही ( ✓ ) चिन्ह लगाकर उत्तर देगा।
3. छौ में पूछे जाने वाले प्रश्न उच्च स्तरीय क्षमताओं जैसे विश्लेषण, तार्किक चिंतन और सीखने के प्रतिफल जांचने की प्रकृति के होंगे।
4. सभी शिक्षक लर्निंग आउटकम्स के आधार पर विद्यार्थियों की तैयारी कराएं । विस्तृत लर्निंग आउटकम्स एवं मॉक टेस्ट हेतु प्रश्नपत्र संलग्न हैं। इन्हें अच्छी तरह से पढकर पढाए जाने वाले टॉपिक के साथ मेप करके पढाएं ।

# हिंदी भाषा सीखने के प्रतिफल

## परिचय

नवीं कक्षा में दाखिल होने वाले विद्यार्थी की भाषा, शैली और विचार बोध एक ऐसा आधार बन चुका होता है कि अब उसे उसके भाषिक दायरे के विस्तार और वैचारिक समृद्धि के लिए जरूरी संसाधन मुहैया कराए जाने की आवश्यकता होती है। माध्यमिक स्तर तक आते-आते विद्यार्थी किशोर हो चुका होता है और उसमें सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने एवं समझने के साथ-साथ आलोचनात्मक दृष्टि विकसित होने लगती है। भाषा के सौंदर्यात्मक पक्ष, कथात्मकता/गीतात्मकता, अखबारी समझ, शब्द की दूसरी शक्तियों के बीच अंतर, राजनैतिक चेतना एवं सामाजिक चेतना का विकास हो जाता है। वह आस-पड़ोस की भाषा और आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त भाषा-प्रयोग, शब्दों के सुचिंतित इस्तेमाल, भाषा की नियमबद्ध प्रकृति आदि से परिचित हो जाता है। इतना ही नहीं वह विभिन्न विधाओं और अभिव्यक्ति की अनेक शैलियों से भी वाकिफ़ हो चुका होता है। अब विद्यार्थी की पढ़ाई आस-पड़ोस, राज्य-देश की सीमा को लाँघते हुए वैश्विक क्षितिज तक फैल जाती है। इन बच्चों की दुनिया में समाचार, खेल, फ़िल्म तथा अन्य कलाओं के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाएँ और अलग-अलग तरह की किताबें भी प्रवेश पा चुकी होती हैं।

यह आवश्यकता है कि इस स्तर पर मातृभाषा हिंदी का अध्ययन साहित्यिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक भाषा के रूप में कुछ इस तरह से हो कि उच्चतर माध्यामिक स्तर तक पहुँचते-पहुँचते यह विद्यार्थियों की पहचान, आत्मविश्वास और विमर्श की भाषा बन सके। प्रयास यह भी होगा कि विद्यार्थी भाषा के लिखित प्रयोग के साथ-साथ सहज और स्वाभाविक मौखिक अभिव्यक्ति में भी सक्षम हो सके। हिंदी की प्रकृति के अनुसार वर्तनी और उच्चारण के आपसी संबंध को समझ सके, ताकि उसकी लिखित और मौखिक भाषा में एक समानता एवं स्पष्टता हो।

## भाषा को सीखना-सिखाना

इस संदर्भ में हम यही कहेंगे कि अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के एक माध्यम के रूप में हम भाषा को पहचानते और समझते रहे हैं, इसीलिए हम सब यही परिभाषा पढ़ते हुए बड़े हुए कि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है; यानी भाषा के ज़रिए ही हम कुछ कहते और लिखते हैं और किसी के द्वारा कहे और लिखे को सुनते और पढ़ते हैं, इसीलिए भाषा के चार कौशलों की बात इस तरह से प्रमुख होती चली गई कि हम भूल ही गए कि कहने-सुनने वाला सोचता भी है। इस संदर्भ में बर्तोल्त ब्रेख्त की कुछ पंक्तियाँ ध्यान देने योग्य हैं, जिनमें सोचने के कौशल की ओर इशारा है—"जनरल, आदमी कितना उपयोगी है, वह उड़ सकता है और मार सकता है। लेकिन उसमें एक नुक्स है— वह सोच सकता है।" बच्चे जो कुछ देखते या सुनते हैं उसे अपनी दृष्टि और समझ से देखते-सुनते हैं और अपनी ही दृष्टि और समझ के साथ बोलते

और लिखते हैं। यह दृष्टि/समझ एक परिवेश और समाज के भीतर ही बनती है, इसलिए परिवेश और समाज के बीच बन रही बच्चे की समझ को उपयुक्त अभिव्यक्ति में समर्थ बनाने की कोशिश होनी चाहिए। जबकि हो यह रहा है कि जब बच्चे स्कूल आते हैं तो घर की भाषा और स्कूल की भाषा के बीच एक द्वंद्व शुरू हो जाता है। इस द्वंद्व से माध्यमिक स्तर के बच्चे जो कि किशोरावस्था में पहुँच रहे होते हैं, को भी जूझना पड़ता है। उनके पास अनेक सवाल हैं, अपने आस-पास के समाज और संसार से। जिनका जवाब वे ढूँढ़ रहे हैं। अगर हमारी भाषा की कक्षा उनके सवालों और जवाबों को, उनकी अपनी भाषा दे सके तो यह इसकी सार्थकता होगी। इसलिए कक्षा में भाषा-कौशलों को एक साथ जोड़कर पढ़ने-पढ़ाने की दृष्टि भी विकसित करनी होगी। यह भी ध्यान रखना होगा कि भाषा-कौशलों को बेहतर बनाने के लिए बच्चे के परिवेश में उस भाषा की उपयुक्त सामग्री उपलब्ध हो। खासतौर से द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने-पढ़ाने वालों के लिए यह ज़रूरी होगा। भाषा पढ़ने के माहौल और प्रक्रिया के अनुसार ही बच्चों में सीखने के प्रतिफल रूपी गुण जाग्रत होंगे।

द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी में निपुणता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हिंदी भाषा में प्रचुर मात्रा में पाठ्यसामग्री के साथ-साथ हिंदी में लगातार रोचक अभ्यास (शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया) करना-कराना। यह प्रक्रिया जितनी अधिक रोचक, सक्रिय एवं प्रासंगिक होगी, विद्यार्थियों की भाषिक उपलब्धि भी उतनी तेज़ी से बढ़ेगी। मुखर भाषिक अभ्यास के लिए वार्तालाप, रोचक ढंग से कहानी कहना-सुनाना, घटना-वर्णन, चित्र-वर्णन, वाद-विवाद, अभिनय, भाषण प्रतियोगिताएँ, कविता पाठ और अंत्याक्षरी जैसी गतिविधियों का सहारा लिया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के श्रव्य-दृश्य — वृत्तचित्रों और फ़ीचर फ़िल्मों को सीखने-सिखाने की सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। जैसा कि हम जानते हैं बहुभाषिकता हमारे ज्ञान-निर्माण की प्रक्रिया में सकारात्मक भूमिका निभाती है। मातृभाषा के विविध भाषा-कौशलों एवं ज्ञान का उपयोग शिक्षक एवं विद्यार्थी द्वितीय-भाषा के रूप में हिंदी सीखने-सिखाने के लिए कर सकते हैं। प्रयास यह हो कि विद्यार्थी अपनी मातृभाषा और परिवेशगत भाषा को साथ रखकर हिंदी भाषा-साहित्य को समझ सकें, उसका आनन्द लें और अपने व्यावहारिक-जीवन में उसका उपयोग कर सकें।

### पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ —

- विद्यार्थी अगले स्तरों पर अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुरूप हिंदी की पढ़ाई कर सकेंगे तथा हिंदी में बोलने और लिखने में सक्षम हो सकेंगे।
- अपनी भाषा-दक्षता के चलते उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और अन्य पाठ्यक्रमों के साथ सहज संबद्धता (अंतर्संबंध) स्थापित कर सकेंगे।
- दैनिक व्यवहार, आवेदन पत्र लिखने, अलग-अलग किस्म के पत्र/ई-मेल लिखने, प्राथमिकी दर्ज कराने इत्यादि में सक्षम हो सकेंगे।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पहुँचकर, भाषा की विभिन्न प्रयुक्तियों में मौजूद अंतर्संबंध को समझ सकेंगे।

- हिंदी में दक्षता को वे अन्य भाषा-संरचनाओं की समझ विकसित करने के लिए इस्तेमाल कर सकेंगे, स्थानांतरित कर सकेंगे।
- कक्षा आठवीं तक अर्जित भाषिक कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना और चिंतन) का उत्तरोत्तर विकास कराना।
- सृजनात्मक साहित्य के आलोचनात्मक आस्वाद की क्षमता का विकास हो सकेगा।
- स्वतंत्र और मौखिक रूप से अपने विचारों की अभिव्यक्ति का विकास हो सकेगा।
- साहित्य की विभिन्न विधाओं के मध्य अंतर्संबंध एवं अंतर की पहचान कर सकेंगे।
- भाषा और साहित्य के रचनात्मक उपयोग के प्रति रुचि उत्पन्न कर सकेंगे।
- ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के, विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना।
- साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं (राष्ट्रीयता, धर्म, जेंडर, भाषा) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का विकास कराना।
- जाति, धर्म, जेंडर, राष्ट्रीयता, क्षेत्र आदि से संबंधित पूर्वाग्रहों के चलते बनी रूढ़ियों की भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सजगता एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास कर सकेंगे।
- विदेशी भाषाओं समेत विभिन्न भारतीय भाषाओं की संस्कृति की विविधता से परिचय कराना।
- व्यावहारिक और दैनिक जीवन में विविध किस्म की अभिव्यक्तियों की मौखिक व लिखित क्षमता का विकास कराना।
- संचार माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से अवगत कराना और उन्हें नए-नए तरीकों से प्रयोग करने की क्षमता का परिचय कराना।
- अर्थपूर्ण विश्लेषण, स्वतंत्र अभिव्यक्ति और तर्क क्षमता का विकास कराना।
- भाषा के अमूर्त रूप को समझने की पूर्व-अर्जित क्षमताओं का उत्तरोत्तर विकास कराना।
- भाषा में मौजूद हिंसा की सरंचनाओं की समझ का विकास कराना।
- मतभेद, विरोध और टकराव की परिस्थितियों में भी भाषा के संवेदनशील और तर्कपूर्ण इस्तेमाल से शांतिपूर्ण संवाद की क्षमता का विकास कराना।
- भाषा की समावेशी और बहुभाषिक प्रकृति के प्रति ऐतिहासिक और सामाजिक नज़रिए का विकास कराना।
- शारीरिक और अन्य सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहे बच्चों में भाषिक क्षमताओं के विकास की उनकी अपनी विशिष्ट गति और प्रतिभा की पहचान कराना।
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से जुड़ते हुए भाषा-प्रयोग की बारीकियों और सावधानियों से अवगत कराना।

## कक्षा 9

| सीखने-सिखाने की प्रक्रिया | सीखने के प्रतिफल |
|---|---|
| **सभी विद्यार्थियों को समझते हुए सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने और परिवेशीय सजगता को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिए जाएँ ताकि—**<br>• संगीत, लोक-कलाओं, फ़िल्म, खेल आदि की भाषा पर पाठ पढ़ने या कार्यक्रम के दौरान गौर से करने/सुनने के बाद संबंधित गतिविधियाँ कक्षा में हों। विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए कि वे आस-पास की ध्वनियों और भाषा को ध्यान से सुनें और समझें।<br>• उन्हें इस बात के अवसर मिलें कि वे रेडियो और टेलीविज़न पर खेल, फ़िल्म, संगीत तथा अन्य गतिविधियों से संबंधित कार्यक्रम देखें/सुनें और उनकी भाषा, लय संचार-संप्रेषण पर चर्चा करें।<br>• रेडियो और टेलीविज़न पर राष्ट्रीय, सामाजिक चर्चाओं को सुनने/देखने और सुनाने/समझने तथा उन पर टिप्पणी करने के अवसर हों।<br>• अपने आस-पास के लोगों की ज़रूरतों को जानने/समझने के लिए उनसे साक्षात्कार और बातचीत के अवसर सुलभ हों, ऐसी गतिविधियाँ पाठ्यक्रम का हिस्सा हों।<br>• हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने-लिखने (ब्रेल तथा अन्य संकेत भाषा में भी) और उन पर बातचीत की आज़ादी हो।<br>• अपने अनुभवों को स्वतंत्र ढंग से लिखने के अवसर हों।<br>• अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों।<br>• अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने की स्वतंत्रता हो।<br>• सक्रिय और जागरूक बनाने वाले स्रोत, अखबार, पत्रिकाएँ, फ़िल्म और अन्य श्रव्य-दृश्य (ऑडियो-वीडियो) सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और लिखकर अभिव्यक्त करने संबंधी गतिविधियाँ हों। | **विद्यार्थी—**<br>• सामाजिक मुद्दों (जेंडरभेद, जातिभेद, विभिन्न प्रकार के भेद) पर कार्यक्रम सुनकर/देखकर अपनी राय व्यक्त करते हैं। जैसे—जब सब पढ़ें तो पड़ोस की मुसकान क्यों न पढ़े? या मुसकान अब पार्क में क्यों नहीं आती?<br>• अपने आस-पड़ोस के लोगों, स्कूली सहायकों या स्कूली साथियों की आवश्यकताओं को कह और लिख पाते हैं।<br>• पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त नई रचनाओं के बारे में जानने/समझने को उत्सुक हैं और उन्हें पढ़ते हैं।<br>• अपनी पसंद की अथवा किसी सुनी हुई रचना को पुस्तकालय या अन्य स्थान से ढूँढ़कर पढ़ने की कोशिश करते हैं।<br>• समाचारपत्र, रेडियो और टेलीविज़न पर प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों, खेल, फ़िल्म, साहित्य-संबंधी समीक्षाओं, रिपोर्टों को देखते, सुनते और पढ़ते हैं।<br>• देखी-सुनी, सुनी-समझी, पढ़ी और लिखी घटनाओं/रचनाओं पर स्पष्टतया मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति करते हैं।<br>• दूसरों द्वारा कही जा रही बातों को धैर्य से सुनकर उन्हें समझते हुए अपनी स्पष्ट राय व्यक्त करते हैं।<br>• अपने अनुभवों, भावों और दूसरों की राय, विचारों को लिखने की कोशिश करते हैं। जैसे— आँख बंद करके यह दुनिया, व्हीलचेयर से खेल मैदान आदि।<br>• किसी सुनी, बोली गई कहानी, कविता अथवा अन्य रचनाओं को रोचक ढंग से आगे बढ़ाते हुए लिखते हैं।<br>• सामाजिक मुद्दों पर ध्यान देते हुए पत्र, नोट लेखन इत्यादि कर पाते हैं। |

- कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे— अभिनय, भूमिका निर्वाह (रोल-प्ले), कविता पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों तथा उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट (पटकथा) लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर सुलभ हों।
- अपने माहौल और समाज के बारे में स्कूल तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी राय देने के अवसर हों।
- कक्षा में भाषा-साहित्य की विविध छवियों/विधाओं के अंतरसंबंधों को समझते हुए उनके परिवर्तनशील स्वरूप पर चर्चा हो, जैसे— आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, कविता, कहानी, निबंध आदि।
- भाषा-साहित्य के सामाजिक-सांस्कृतिक-सौंदर्यात्मक पक्षों पर चर्चा/विश्लेषण करने के अवसर हों।
- संवेदनशील मुद्दों पर आलोचनात्मक विचार विमर्श के अवसर हों, जैसे— जाति, धर्म, रीति-रिवाज़, जेंडर आदि।
- कृषि, लोक-कलाओं, हस्त-कलाओं, लघु-उद्योगों को देखने और जानने के अवसर हों और उनसे संबंधित शब्दावली को जानने और उनके उपयोग के अवसर हों।
- कहानी, कविता, निबंध आदि विधाओ में व्याकरण के विविध प्रयोगों तथा उपागमों पर चर्चा के अवसर हों।
- विद्यार्थी को अपनी विभिन्न भाषाओं के व्याकरण से तुलना/समानता देखने के अवसर हों।
- रचनात्मक-लेखन, पत्र-लेखन, टिप्पणी, निबंध, अनुच्छेद आदि लिखने के अवसर हों।

- पाठ्यपुस्तकों में शामिल रचनाओं के अतिरिक्त, जैसे— कविता, कहानी, एकांकी, गद्य-पद्य की अन्य विधाओं को पढ़ते-लिखते हैं और कविता की ध्वनि और लय पर ध्यान देते हैं।
- संगीत, फ़िल्म, विज्ञापनों खेल आदि की भाषा पर ध्यान देते हैं। जैसे— उपर्युक्त विषयों की समीक्षा करते हुए उनमें प्रयुक्त रजिस्टरों का उपयोग करते हैं।
- भाषा-साहित्य की बारीकियों पर चर्चा करते हैं, जैसे— विशिष्ट शब्द-भंडार, वाक्य-संरचना, शैली-संरचना, मौलिकता आदि।
- अपने आस-पास के रोज़ाना बदलते पर्यावरण पर ध्यान देते हैं तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए सचेत होते हैं। जैसे— कल तक यहाँ पेड़ था, अब यहाँ इमारत बनने लगी?
- अपने साथियों की भाषा, उनके विचार, व्यवहार, खान-पान, पहनावा संबंधी जिज्ञासा को कहकर और लिखकर व्यक्त करते हैं।
- हस्तकला, वास्तुकला, खेतीबाड़ी के प्रति अपनी रुचि व्यक्त करते हैं तथा इनमें प्रयुक्त होने वाली भाषा को जानने की उत्सुकता रखते हैं।
- जाति, धर्म, रीति-रिवाज़, जेंडर आदि मुद्दों पर प्रश्न करते हैं।
- अपने परिवेश की समस्याओं पर प्रश्न तथा साथियों से बातचीत/चर्चा करते हैं।
- सभी विद्यार्थी अपनी भाषाओं की संरचना से हिंदी की समानता और अंतर को समझते हैं।

## कक्षा 10

| सीखने-सिखाने की प्रक्रिया | सीखने के प्रतिफल |
|---|---|
| **सभी विद्यार्थियों को समझते हुए सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने और परिवेशीय सजगता को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिए जाएँ ताकि—**<br>• संगीत लोक-कलाओं, फ़िल्म, खेल आदि की भाषा पर पाठ पढ़ने या कार्यक्रम के दौरान गौर करने/सुनने के बाद संबंधित गतिविधियाँ कक्षा में हों। विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए कि वे आस-पास की ध्वनियों और भाषा को ध्यान से सुनें और समझें।<br>• उन्हें इस बात के अवसर मिलें कि वे रेडियो और टेलीविज़न पर खेल, फ़िल्म, संगीत आदि से संबंधित कार्यक्रम देखें और उनकी भाषा, लय, संचार-प्रभाविता आदि पर चर्चा करें।<br>• रेडियो और टेलीविज़न पर राष्ट्रीय, सामाजिक चर्चाओं को सुनने/देखने और सुनने/सुनाने तथा उन पर टिप्पणी करने के अवसर हों।<br>• अपने आस-पास के लोगों की ज़रूरतों को जानने के लिए उनसे साक्षात्कार और बातचीत के अवसर सुलभ हों, ऐसी गतिविधियाँ पाठ्यक्रम का हिस्सा हों।<br>• हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने-लिखने (ब्रेल तथा अन्य संकेत भाषा में भी) और उन पर बातचीत की आज़ादी हो।<br>• अपने अनुभवों को स्वतंत्र ढंग से स्वयं की भाषा में लिखने के अवसर हों।<br>• अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों।<br>• अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने की स्वतंत्रता हो।<br>• सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फ़िल्म और अन्य दृश्य-श्रव्य (श्रव्य-दृश्य) सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और लिखकर अभिव्यक्त करने संबंधी गतिविधियाँ हों।<br>• कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे—अभिनय, भूमिका निर्वाह (रोल-प्ले), कविता पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों तथा उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट (पटकथा) लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हों। | **विद्यार्थी —**<br>• अपने परिवेशगत अनुभवों पर अपनी स्वतंत्र और स्पष्ट राय मौखिक एवं लिखित रूप में व्यक्त करते हैं। जैसे—मुसकान आजकल चुप क्यों रहती है? मुसकान को स्कूल में हम लाएँगे।<br>• अपने आस-पास और स्कूली साथियों की ज़रूरतों को अपनी भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। जैसे— भाषण या वाद विवाद में इन पर चर्चा करते हैं।<br>• आँखों से न देख सकने वाले साथी की ज़रूरत की पाठ्यसामग्री को उपलब्ध कराने के संबंध में पुस्तकालयाध्यक्ष से बोलकर और लिखकर निवेदन करते हैं।<br>• न बोल सकने वाले साथी की बात को समझकर अपने शब्दों में बताते हैं।<br>• नई रचनाएँ पढ़कर उन पर परिवार एवं साथियों से बातचीत करते हैं।<br>• रेडियो, टी.वी. या पत्र-पत्रिकाओं व अन्य श्रव्य-दृश्य संचार माध्यमों से प्रसारित, प्रकाशित रूप को कथा साहित्य एवं रचनाओं पर मौखिक एवं लिखित टिप्पणी/विश्लेषण करते हैं। पत्रिका पर प्रसारित/प्रकाशित विभिन्न पुस्तकों की समीक्षा पर अपनी टिप्पणी देते हुए विश्लेषण करते हैं।<br>• अपने अनुभवों एवं कल्पनाओं को सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं। जैसे—कोई यात्रा वर्णन, संस्मरण लिखना।<br>• कविता या कहानी की पुनर्रचना कर पाते हैं। जैसे— किसी चर्चित कविता में कुछ पंक्तियाँ जोड़कर नई रचना बनाते हैं।<br>• औपचारिक पत्र, जैसे—प्रधानाचार्य, संपादक को अपने आस-पास की समस्याओं/मुद्दों को ध्यान में रखकर पत्र लिखते हैं।<br>• रोज़मर्रा के जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति-विशेष में भाषा का काल्पनिक और सृजनात्मक प्रयोग करते हुए लिखते हैं। जैसे—दिन में रात, बिना बोले एक दिन, बिना आँखों के एक दिन आदि। |

- अपने माहौल और समाज के बारे में स्कूल तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी राय देने के अवसर हों।
- कक्षा में भाषा-साहित्य की विविध छवियों/विधाओं के अंतरसंबंधों को समझते हुए उनके परिवर्तनशील स्वरूप पर चर्चा हो, जैसे—आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, कविता, कहानी, निबंध आदि।
- भाषा-साहित्य के सामाजिक-सांस्कृतिक-सौंदर्यात्मक पक्षों पर चर्चा/विश्लेषण करने के अवसर हों।
- संवेदनशील मुद्दों पर आलोचनात्मक विचार विमर्श के अवसर हों, जैसे— जाति, धर्म, रीति-रिवाज़, जेंडर आदि।
- कृषि, लोक-कलाओं, हस्त-कलाओं, लघु-उद्योगों को देखने और जानने के अवसर हों और उनसे संबंधित शब्दावली को जानने और उनके उपयोग के अवसर हों।
- कहानी, कविता, निबंध आदि विधाओ में व्याकरण के विविध प्रयोगों पर चर्चा के अवसर हों।
- विद्यार्थी को अपनी विभिन्न भाषाओं के व्याकरण से तुलना/समानता देखने के अवसर हों।
- रचनात्मक लेखन, पत्र-लेखन, टिप्पणी, अनुच्छेद—गद्य-पद्य के सभी रूपों में, निबंध, यात्रा वृतांत आदि लिखने के अवसर हों।
- उपलब्ध सामग्री एवं भाषा में व्याकरण के मौलिक प्रयोग की चर्चा एवं विश्लेषण के अवसर हों।
- दैनिक जीवन मे भाषा के उपयोग के विविध प्रकार एवं परिवेशगत/अनुभव-आधारित-रचनात्मक लेखन के अवसर उपलब्ध हों।

- पाठ्यपुस्तकों में शामिल रचनाओं के अतिरिक्त अन्य कविता, कहानी, एकांकी को पढ़ते-लिखते और मंचन करते हैं।
- भाषा-साहित्य की बारीकियों पर चर्चा करते हैं, जैसे—विशिष्ट शब्द-भंडार, वाक्य-संरचना, शैली के प्रयोगिक प्रयोग एवं संरचना आदि।
- विविध साहित्यिक विधाओं के अंतर को समझते हुए उनके स्वरूप का विश्लेषण निरूपण करते हैं।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं को पढ़ते हुए व्याकरणिक संरचनाओं पर चर्चा/टिप्पणी करते हैं।
- प्राकृतिक एवं सामाजिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं।
- फिल्म एवं विज्ञापनों को देखकर उनकी समीक्षा लिखते हुए, दृश्यमाध्यम की भाषा का प्रयोग करते हैं।
- परिवेशगत भाषा प्रयोगों पर प्रश्न करते हैं। जैसे—रेलवे स्टेशन/एयरपोर्ट/बस स्टैंड, ट्रक, ऑटो रिक्शा पर लिखी कई भाषाओं में एक ही तरह की बातों पर ध्यान देंगे।
- अपने परिवेश को बेहतर बनाने की कोशिश में सृजनात्मक लेखन करते हैं। जैसे—क्या-क्या रिसाइकलिंग कर सकते हैं और पेड़ों को कैसे बचाएँ।
- हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी के प्रति अपना रुझान व्यक्त करते हैं तथा इनमें प्रयुक्त कलात्मक संदर्भों/भाषिक प्रयोगों को अपनी भाषा में जोड़कर बोलते-लिखते हैं।

## समावेशी शिक्षण व्यवस्था के लिए कुछ सुझाव

कक्षा में सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या समान रहती है एवं कक्षा-गतिविधियों में सभी बच्चों की प्रतिभागिता होनी चाहिए। विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या में कई बार रूपान्तरों की आवश्यकता होती है। दिए गए सीखने के प्रतिफल समावेशी शिक्षण व्यवस्था के लिए हैं, परंतु कक्षा में ऐसे भी बच्चे होते हैं, जिनकी कुछ विशेष आवश्यकताएँ होती हैं, जैसे— दृष्टि-बाधित, श्रव्य-बाधित इत्यादि। उन्हें अतिरिक्त सहयोग की आवश्यकता होती है। उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित हैं—

- अध्यापक द्वारा विभिन्न प्रारूपों (जैसे— पत्र लेखन, आवेदन आदि) को मौखिक रूप से समझाया जा सकता है।
- विद्यार्थियों को बोलकर पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
- अध्यापक बातचीत के माध्यम से कक्षा में संप्रेषण कौशल को बढ़ा सकते हैं।
- नए शब्दों की जानकारी ब्रेल लिपि में अर्थ सहित दी जानी चाहिए।
- दैनिक गतिविधियों का मौखिक अर्थपूर्ण भाषिक अभ्यास।
- शब्दों का विस्तृत उच्चारणगत हो, जैसे— मिनट, विशाल, समुद्र, छोटे जीव तथा कीट इत्यादि।
- प्रश्नों का निर्माण करना और बच्चों को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना। साथ ही बच्चों को भी प्रश्न-निर्माण करने को कहना और स्वयं उनका उत्तर तलाश करने के लिए कहना।
- उच्चारण सुधारने के लिए ऑडियो सामग्री का प्रयोग और कहानी सुनाना। अलग-अलग तरह की आवाज़ों की रिकॉर्डिंग करके, जैसे— झरना, हवा, लहरें, तूफ़ान, जानवर और परिवहन, ताकि उनके माध्यम से संकल्पना/धारणा/विचार को समझाया जा सके।
- विद्यार्थियों को एक – दूसरे से बातचीत के लिए प्रेरित करना।
- अभिनय, नाटक और भूमिका-निर्वाह (रोल-प्ले) का प्रयोग करने के लिए प्रेरणा देना।
- पढ़ाए जाने वाले विषय पर दृश्य-शब्दकोश की शीट तैयार की जाए, जैसे— शब्दों को चित्रों के माध्यम से दिखाया/बताया जाए।
- बोर्ड पर नए शब्दों को लिखना। यदि उपलब्ध हो तो शब्दकोश के शब्दों को चित्र के माध्यम से प्रयोग किया जाए।
- नए शब्दों को बच्चों के रोज़मर्रा के जीवन में इस्तेमाल करना और विभिन्न प्रसंगों में उनका प्रयोग करना।
- शीर्षक और विवरण के साथ दृश्यात्मक तरीके से कक्षा में शब्दों का प्रयोग करना।
- स्पष्ट रूप से समझाने के लिए फुटनोट को उदाहरण के साथ लिखना।

- संप्रेषण के विभिन्न तरीकों (जैसे—मौखिक एवं अमौखिक ग्राफ़िक्स, कार्टून्स (बोलते हुए गुब्बारे), चित्रों, संकेतों, ठोस वस्तुएँ एवं उदाहरण) का प्रयोग करना।
- लिखित सामग्री को छोटे-छोटे एवं सरल वाक्यों में तोड़ना, संक्षिप्त करना तथा लेखन को व्यवस्थित करना।
- बच्चों को इस योग्य बनाना कि वे रोज़मर्रा की घटनाओं को साधारण ढंग से डायरी, वार्तालाप, जर्नल, पत्रिका इत्यादि के रूप में लिख सकें।
- वाक्यों की बनावट पर आधारित अभ्यासों को बार-बार देना, ताकि बच्चा शब्दों एवं वाक्यों के प्रयोग को ठीक ढंग से सीख सके। चित्रों/समाचारों/समसामयिक घटनाओं से उदाहरणों का प्रयोग करें।
- बच्चों के स्तर के अनुसार उन्हें पाठ्य-सामग्री तथा संसाधन प्रदान करना।
- पाठ में आए मुख्य शब्दों पर आधारित तरह-तरह के अनुभवों को देना।
- कलर कोडिंग *(colour coding)* प्रयोग करना (जैसे—स्वर एवं व्यंजन के लिए अलग-अलग रंगों का प्रयोग), कांसेप्ट मैप *(concept map)* तैयार करना।
- प्रस्तुतिकरण के लिए विभिन्न शैली एवं तरीकों, जैसे— दृश्य, श्रव्य, प्रायोगिक शिक्षण इत्यादि का प्रयोग।
- अनुच्छेदों को सरल बनाने के लिए उनकी जटिलता को कम किया जाए।
- सामग्री को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए भिन्न-भिन्न विचारों, नए शब्दों के प्रयोग, कार्डस, हाथ की कठपुतली, वास्तविक जीवन के अनुभवों, कहानी प्रस्तुतिकरण, वास्तविक वस्तु एवं पूरक सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है।
- अच्छी समझ के लिए ज़रूरी है कि विषय से संबंधित पृष्ठभूमि के बारे में पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए नई सूचना दी जाए।
- कविताओं का पठन, समुचित भावाभिव्यक्ति/अभिनय/गायन के साथ किया जाए।
- पाठों के परिचय एवं परीक्षण खंड अथवा आकलन में विभिन्न समूहों के लिए विभिन्न प्रकार के प्रश्नों की रचना की जा सकती है।
- पठन-कार्य को अच्छा बनाने के लिए दो-दो बच्चों के समूह द्वारा पाठ्यसामग्री को प्रस्तुत करवाया जाए।
- कठिन शब्दों के लिए शब्दों के अर्थ या पर्यायवाची, उन शब्दों के साथ ही कोष्ठक में लिखे जाएँ। जिन शब्दों की व्याख्या ज़रूरी हो, उन्हें व्याख्यायित किया जाए तथा सारांश को रेखांकित किया जाए।

## सीखने के प्रतिफल— कुछ महत्वपूर्ण बिंदु

- सीखने के प्रतिफल सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान शिक्षकों तथा बच्चों को सिखाने में मदद करने वाले सभी लोगों की सुविधा के लिए विकसित किए गए हैं।
- माध्यमिक स्तर (9–10) पर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया और माहौल में विशेष अंतर नहीं किया गया है। यद्यपि भाषा सीखने-सिखाने के विकासात्मक स्तर में अंतर हो सकता है।
- भाषा सीखने के प्रतिफलों को ठीक ढंग से उपयोग करने के लिए, दस्तावेज़ में प्रारंभिक पृष्ठभूमि दी गई है। इसे पढ़ें, यह बच्चों की प्रगति को सही ढंग से समझने में मदद करेगी।
- इसमें *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005* के आधार पर विकसित पाठ्यक्रम में नवीं और दसवीं कक्षाओं के लिए हिंदी शिक्षण के उद्देश्यों को दृष्टि में रखते हुए पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ दी गई हैं।
- इन पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाओं को विद्यार्थी तभी हासिल कर सकता है, जब सीखने के तरीके और कक्षा में अनुकूल माहौल हो।
- यद्यपि हमारी कोशिश यही रही है कि कक्षावार प्रतिफलों को दिया जाए, लेकिन भाषा की कक्षा में सीखने के विभिन्न चरणों को देखते हुए इस प्रकार का बारीक अंतर कर पाना मुश्किल हो जाता है।
- सीखने के प्रतिफल बच्चे के मनोवैज्ञानिक धरातल को ध्यान में रखते हुए, सीखने की प्रक्रिया के सभी अधिगमानुकूल तथ्यों व आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं।
- ये प्रतिफल सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान सतत और समग्र आकलन में भी आपकी मदद करेंगे, क्योंकि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान ही बच्चे को लगातार फ़ीडबैक (प्रतिपुष्टि) भी मिलता जाएगा।
- इन प्रतिफलों की अच्छी समझ बनाने के लिए पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम को पढ़ना-समझना बेहद ज़रूरी है।
- ये प्रतिफल विद्यार्थी की योग्यता, कौशल, मूल्य, दृष्टिकोण तथा उसकी व्यक्तिगत और सामाजिक विशेषताओं से जुड़े हुए हैं। आप देखेंगे कि विद्यार्थी की आयु, स्तर और परिवेश की भिन्नताओं के अनुसार प्रतिफलों के सिद्धांत परिणाम में भी बदलाव आता है।
- समावेशी कक्षा को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम की अपेक्षाओं, सीखने के तरीके और माहौल तथा प्रतिफलों के विकास में सभी तरह के बच्चों को ध्यान में रखा गया है।
- अलग-अलग शिक्षार्थी-समूहों एवं भाषायी परिवेश के अनुसार उल्लिखित एक ही प्रतिफल का अलग-अलग स्तर संभव है, जैसे— लिखने-पढ़ने या राय व्यक्त करने की दक्षता के अनुसार संबंधित प्रतिफलों का विविध स्तर हो सकता है।
- इस दस्तावेज़ में चिह्नित किए गए प्रतिफलों के अतिरिक्त-प्रतिफलों की ओर भी अध्यापकों का ध्यान जाना चाहिए।